NEXT IAS

भारतीय समाज

सिविल सेवा परीक्षा 2025

MADE EASY PUBLICATIONS
द्वारा प्रकाशित

MADE EASY Publications Pvt. Ltd.

कॉर्पोरेट कार्यालय: 44-A/4, कालू सराय
(हौज़ ख़ास मेट्रो स्टेशन के निकट), नई दिल्ली-110016
संपर्क सूत्र: 011-45124660, 8860378007
ई-मेल करें: infomep@madeeasy.in
विजिट करें: www.madeeasypublications.org

भारतीय समाज

© कॉपीराइट: Made Easy Publications Pvt. Ltd.

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, पुनर्मुद्रण, प्रस्तुतीकरण और किसी ऐसे यंत्र में संग्रहण नहीं किया जा सकता, जिससे इसकी पुनर्प्राप्ति की जा सकती हो अथवा इसका स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार) से उपर्युक्त उल्लिखित प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण: 2024

विषयसूची

भारतीय समाज

अध्याय 1

भारतीय समाज: एक अवलोकन
(Indian Society : An Overview) 2
1.1 परिचय (Introduction) 2
1.2 भारतीय समाज की मुख्य विशेषताएँ (Salient Features of Indian Society) 2
1.2.1 जाति व्यवस्था (Caste System) 3
1.2.2 धार्मिक विविधता (Religious Diversity) 7
1.2.3 भाषायी विविधता (Linguistic Diversity) 7
1.2.4 नृजातीय और नस्लीय विविधता (Ethnic and Racial Diversity) 7
1.2.5 रूढ़िवादिता/अंधविश्वास (Orthodoxy/Superstition) 8
1.2.6 संक्रमणकालीन समाज (Transitional Society) ... 9
1.2.7 परिवार और संबंधी (Family and Kinship) 9
1.2.8 आदिवासी समाज 11
1.2.9 कला एवं संस्कृति (Art and Culture) 11
1.2.10 एक इकाई के रूप में भौगोलिक विविधता (Geography as a Unit of Diversity) 12
1.2.11 दार्शनिक/वैचारिक विविधता (Philosophical/Ideological Diversity) 12
1.2.12 सहिष्णुता, प्रेम और करुणा (Tolerance, Love and Compassion) 12
1.2.13 परस्पर निर्भरता (Interdependence) 13
1.3 अनेकता में एकता (Unity in Diversity) 13
1.3.1 भौगोलिक विविधता एवं एकता (Geographical Diversity and Unity) 13
1.3.2 वैचारिक विविधता एवं एकता (Ideological Diversity and Unity) 13
1.3.3 धार्मिक विविधता और एकता (Religious Diversity and Unity) 14
1.3.4 भाषायी विविधता और एकता (Linguistic Diversity and Unity) 14
1.3.5 राजनीतिक विविधता और एकता (Political Diversity and Unity) 15
1.4 निष्कर्ष (Conclusion) 15

अध्याय 2

भारतीय समाज में लैंगिक प्रस्थिति
(Gender in Indian Society) 17
2.1 परिचय (Introduction) 17
2.2 सुधार आंदोलन: एक ऐतिहासिक विवरण (Reform Movements: A Historical Account) 17
2.2.1 स्वतंत्रता पूर्व (Pre-Independence) 17
2.2.2 स्वतंत्रता के पश्चात् (Post-Independence) ... 18
2.3 महिलाओं की भूमिका (Role of Women) 20
2.3.1 परिवार और समाज में महिलाओं की भूमिका (Role of Women in Family and Society) 20
2.3.2 राजनीति में महिलाओं की भूमिका (Role of Women in Polity) 20
2.3.3 अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका (Role of Women in Economy) 21
2.3.4 विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भूमिका (Role of Women in Science and Technology) 22
2.3.5 पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका (Role of Women in Environment Preservation) 22
2.4 कार्य में भागीदारी: एक समीक्षात्मक परिप्रेक्ष्य (Participation in Work: A Critical Perspective) 23
2.4.1 निम्न श्रम बल भागीदारी दर (Low Labour Force Participation Rate) 23
2.4.2 वेतन असमानता (Wage Disparity) 24
2.5 महिलाओं से संबंधित मुद्दे (Issues Concerning Women) 24
2.5.1 कन्या भ्रूणहत्या और शिशुहत्या (Female Foeticide and Infanticide) 24
2.5.2 बाल विवाह (Child Marriage) 25
2.5.3 घरेलू हिंसा और दहेज से होने वाली मौतें (Domestic Violence and Dowry Deaths) ... 25
2.5.4 यौन उत्पीड़न (Sexual Harassment) 25
2.5.5 साइबर अपराध (Cybercrime) 26
2.5.6 उपभोक्ताकरण और वस्तुकरण (Commodification and Objectification) 26
2.5.7 वेश्यावृत्ति (Prostitution) 27

2.5.8 ऑनर किलिंग (Honour Killing) 27
2.5.9 लिंग भेदभाव (Gender Discrimination)..... 27
2.5.10 गरीबी का महिलाकरण (Feminisation of Poverty)..... 28
2.5.11 कृषि का महिलाकरण (Feminisation of Agriculture) 29
2.5.12 तीन तलाक मुद्दा (Triple Talaq Issue) 29
2.5.13 मंदिर प्रवेश मुद्दा (Temple Entry Issue) 29
2.6 महिला सशक्तीकरण के लिए संवैधानिक एवं वैधानिक प्रावधान (Constitutional and Statutory Provisions for Women Empowerment)..... 30
2.6.1 संवैधानिक प्रावधान (Constitutional Provisions)..... 30
2.6.2 वैधानिक प्रावधान (Statutory Provisions) 30
2.7 संस्थाएँ (Institutions)..... 32
2.8 महिलाओं के लिए राष्ट्रीय नीति (National Policy for Women)..... 32
2.8.1 तर्क (Rationale)..... 32
2.8.2 प्राथमिकता वाले क्षेत्र (Priority Areas)..... 33
2.8.3 कार्यान्वयन 34
2.9 महिला विकास (Women Development)..... 34
2.9.1 विकास में महिलाएँ (Women in Development)..... 34
2.9.2 महिला एवं विकास (Women and Development) 34
2.9.3 लिंग एवं विकास (Gender and Development) 35
2.10 लिंग और लैंगिकता (Sex and Gender)..... 35
2.11 महिलाओं के पक्ष-समर्थन में विश्व (Global Advocacy for Women) 35
2.12 एमडीजी और एसडीजी: महिलाओं के लिए लक्ष्य (MDG and SDG: Goals for Women)..... 36
2.12.1 स्वास्थ्य (Health) 36
2.12.2 साक्षरता (Literacy) 37
2.13 महिलाओं के लिए सरकारी योजनाएँ (Government Schemes for Women) 37
2.13.1 जेंडर बजटिंग (Gender Budgeting)..... 37
2.13.2 बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ (Beti Bachao Beti Padhao)..... 37
2.13.3 सुकन्या समृद्धि योजना (Sukanya Samriddhi Yojana)..... 37
2.13.4 जननी सुरक्षा योजना (Janani Suraksha Yojana) 37
2.13.5 उज्ज्वला (Ujjwala)..... 37
2.13.6 किशोरियों के सशक्तीकरण के लिए राजीव गाँधी योजना (Rajiv Gandhi Scheme for Empowerment of Adolescent Girls) 37
2.13.7 स्वाधार गृह (Swadhar Greh)..... 38
2.13.8 महिलाओं के लिए प्रशिक्षण और रोज़गार कार्यक्रम को सहायता (STEP)..... 38
2.13.9 महिला शक्ति केंद्र (Mahila Shakti Kendras) . 38
2.13.10 महिला पुलिस स्वयंसेवक (Mahila Police Volunteer) 38
2.13.11 प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (Pradhan Mantri Matru Vandana Yojana) . 38
2.13.12 जेंडर चैंपियंस योजना (Gender Champions Scheme)..... 38
2.13.13 महिला ई-हाट (Mahila E-haat) 38
2.13.14 स्टैंड-अप इंडिया (Stand-Up India)..... 38
2.13.15 सरकारी पहलों का आलोचनात्मक मूल्यांकन (Critical Evaluation of Government Initiatives) 38
2.13.16 संभावित उपाय (Possible Remedies) 39
2.14 महिला संगठन (Women's Organization) 39
2.15 भारत में महिलाएँ और कोविड-19 (Women and COVID-19 in India)..... 40
2.16 ट्रांसजेंडर (Transgender)..... 40
2.16.1 परिचय (Introduction) 40
2.16.2 इतिहास (History)..... 41
2.16.3 क्रमिक विकास (Evolution)..... 41
2.16.4 वर्तमान काल (Contemporary Period) 42
2.16.5 ट्रांसजेंडर के समक्ष चुनौतियाँ और उसकी स्थिति (Challenges and Status of Transgender).. 42
2.16.6 संभावित उपाय (Possible Remedies) 43
2.16.7 ट्रांसजेंडरों के लिए सरकार द्वारा उठाये गए कदम (Steps by Government for Transgenders) 44
2.16.8 ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 [Transgender Persons (Protection of Rights) Act, 2019]..... 45

अध्याय 3

जनसंख्या और संबंधित मुद्दे

(Population and Associated Issues)..... 46
3.1 परिचय (Introduction) 46
3.1.1 माल्थस का जनसंख्या वृद्धि का सिद्धांत (Malthusian Theory of Population Growth) 46
3.1.2 जनसांख्यिकीय संक्रमण का सिद्धांत (Theory of Demographic Transition) 46
3.2 भारत: जनसंख्या और गतिशीलता (India: Population and Dynamics) 48
3.2.1 आकार, वृद्धि, संरचना और वितरण (Size, Growth, Composition and Distribution)..... 48

3.2.2 भारतीय जनसंख्या की आयु संरचना (Age Structure of the Indian Population) .. 49
3.2.3 जनसंख्या वृद्धि के घटक (Components of Population Growth) 49
3.2.4 भारत में प्रवास की प्रवृत्तियाँ (Trends of Migration in India) 50
3.2.5 उभरते सामाजिक मुद्दे 54
3.3 उच्च जनसंख्या के कारण (Causes of High Population) 57
3.4 जनसंख्या आधिक्य के प्रभाव (Effects of Overpopulation) 57
3.4.1 सामाजिक (Social) 57
3.4.2 आर्थिक (Economic) 58
3.4.3 राजनीतिक (Political) 58
3.4.4 पर्यावरण (Environmental) 58
3.4.5 स्वास्थ्य (Health) 58
3.5 जनसांख्यिकी: लाभांश या आपदा (Demography: A Dividend or Disaster) 58
3.5.1 जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend) 59
3.5.2 जनसांख्यिकीय आपदा (Demographic Disaster) 59
3.6 जनसंख्या और निर्धनता (Population and Poverty) 60
3.7 जनसंख्या नियंत्रण (Population Control) 60
3.7.1 जनसंख्या नीति (Population Policy) 60
3.7.2 परिवार नियोजन (Family Planning) 61
3.7.3 भारत में जनसंख्या नीति (Population Policy in India) 61
3.7.4 परिवार नियोजन (Family Planning) के लिए सरकारी योजनाएँ 62
3.7.5 महिला सशक्तीकरण (Women Empowerment) 63
3.7.6 शिक्षा (Education) 63
3.7.7 दत्तक ग्रहण (Adoption) 63
3.7.8 सामाजिक उपाय (Social Measures) 63
3.7.9 आर्थिक उपाय (Economic Measures) 64
3.8 निष्कर्ष (Conclusion) 64

अध्याय 4

गरीबी एवं विकास संबंधी मुद्दें
(Poverty and Developmental Issues) 65
4.1 परिचय (Introduction) 65
4.2 भारत में गरीबी: एक ऐतिहासिक विवरण (Poverty in India: A Historical Account) 65
4.3 गरीबी के कारण (Causes of Poverty) 66
4.3.1 आर्थिक (Economic) 66
4.3.2 सामाजिक (Social) 66
4.3.3 प्रशासनिक (Administrative) 67
4.3.4 भौगोलिक (Geographical) 67
4.4 निरपेक्ष बनाम सापेक्ष गरीबी (Absolute Vs Relative Poverty) 68
4.5 गरीबी मापन (Poverty Measurement) 68
4.5.1 गरीबी आकलन समितियाँ (Poverty Measurement Committees) 68
4.6 बहुआयामी निर्धनता सूचकांक (Multidimensional Poverty Index) 70
4.7 गरीबी और उससे जुड़े मुद्दे (Poverty and Associated Issues) 72
4.7.1 बेरोजगारी (Unemployment) 72
4.7.2 कुपोषण (Malnutrition) 72
4.7.3 स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं स्वच्छता तंत्र (Health, Hygiene and Sanitation) 72
4.7.4 निरक्षरता (Illiteracy) 72
4.7.5 गरीबी का नारीकरण (Feminization of Poverty) 72
4.7.6 अपराध एवं सामाजिक तनाव (Crime and Social Tension) 72
4.7.7 बाल श्रम और आधुनिक दासता 73
4.7.8 निर्बल नागरिक समाज (Weak Civil Society) .. 73
4.8 शहरी और ग्रामीण गरीबी (Urban and Rural Poverty) 73
4.9 वृद्धि और विकास (Growth and Development) 74
4.9.1 विकासोन्मुखी दृष्टिकोण (Growth Oriented Approach) 74
4.9.2 सामाजिक न्याय के साथ विकास (Growth with Social Justice) 74
4.9.3 समावेशी विकास (Inclusive Development) .. 74
4.9.4 सतत् विकास (Sustainable Development) .. 74
4.9.5 वित्तीय समावेशन (Financial Inclusion) 75
4.9.6 क्षमता उपागम (Capability Approach) 75
4.10 वैश्वीकरण और गरीबी: एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण (Globalization and Poverty: A Critical Perspective) 76
4.11 गरीबी की राजनीति: गरीबीवाद (Politics of Poverty: Povertarianism) 76
4.12 गरीबी उन्मूलन हेतु सरकारी प्रयास (Government's Effort to Eradicate Poverty) 77

4.12.1 पंचवर्षीय योजनाएँ (Five Year Plans) 77
4.12.2 राष्ट्रीयकरण (Nationalization)..... 77
4.12.3 बीस सूत्रीय कार्यक्रम (Twenty Points Program)..... 77
4.12.4 गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम (Poverty Alleviation Programs) 78
4.13 गरीबी उन्मूलन के लिए सरकारी प्रयास: एक आलोचनात्मक विश्लेषण (Government Efforts for Poverty Alleviation: A Critical Analysis) 87
4.14 गरीबी उन्मूलन (Eradication of Poverty)..... 87
4.14.1 जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण (Check on Population Growth) 87
4.14.2 प्रति व्यक्ति खाद्य उत्पादन में वृद्धि (Increase in Per Capita Food Production)..... 87
4.14.3 कृषि एवं भूमि सुधार (Agriculture and Land Reform)..... 87
4.14.4 आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि (Increase in Production of Essential Items)..... 88
4.14.5 शिक्षा (Education)..... 88
4.14.6 कौशल विकास (Skill Development)..... 88
4.14.7 आय असमानता की समस्या का हल (Tackle the Problem of Income Disparity)..... 88
4.14.8 महिला सशक्तीकरण (Women Empowerment) 88
4.14.9 काले धन की समस्या का हल (Tackle the Problem of Black Money) 88
4.14.10 विकेंद्रीकृत नियोजन और उसका क्रियान्वयन (Decentralized Planning and its Execution)..... 88
4.15 निष्कर्ष (Conclusion)..... 88

अध्याय 5

नगरीकरण (Urbanization) 90
5.1 परिचय (Introduction) 90
5.2 नगरीकरण क्या है? (What is Urbanization)..... 90
5.3 नगरीकरण द्वारा सामाजिक परिवर्तन का तंत्र (The Mechanism of Social Change by Urbanization)..... 91
5.4 भारत में नगरीकरण के सामाजिक प्रभाव (Social Effects of Urbanization in India) 91
5.4.1 परिवार और नातेदारी/संबंध (Family and kinship) 91
5.4.2 नगरीकरण और जाति (Urbanisation and Caste)..... 92
5.4.3 नगरीकरण और महिलाएँ (Urbanization and Women) 92
5.4.4 नगरीकरण और प्रवासन (Urbanization and Migration)..... 93
5.4.5 नगरीकरण और स्वास्थ्य (Urbanization and Health)..... 94
5.4.6 नगरीकरण और पहचान (Urbanization and Identity)..... 94
5.4.7 नगरीकरण और पर्यावरण (Urbanization and Environment)..... 95
5.4.8 नगरीकरण और असमानता (Urbanization and Inequality)..... 95
5.4.9 नगरीकरण और अपराध (Urbanization and Crime)..... 95
5.5 अनियोजित नगरीकरण (Unplanned Urbanization)..... 95
5.5.1 मलिन बस्तियों का उदय (Rise of Slum Society)..... 95
5.6 आगे की राह (Way Forward) 96
5.7 शहरी क्षेत्र और कोविड महामारी (Urban Areas and Covid Pandemic)..... 96

अध्याय 6

वैश्वीकरण और भारतीय समाज (Globalisation and Indian Society) 97
6.1 परिचय (Introduction) 97
6.2 वैश्वीकरण: विभिन्न परिप्रेक्ष्य (Globalisation: Various Perspectives)..... 97
6.2.1 अतिवैश्विकतावादी परिप्रेक्ष्य/दृष्टिकोण (Hyperglobalist Perspective)..... 97
6.2.2 संशयात्मक परिप्रेक्ष्य (Skeptical Perspective) 97
6.2.3 परिवर्तनवादी परिप्रेक्ष्य (Transformationalists Perspective)..... 98
6.3 वैश्वीकरण के प्रभाव: भारत (Effects of Globalisation: India) 98
6.3.1 राजनीतिक (Political) 98
6.3.2 आर्थिक (Economic) 99
6.3.3 सामाजिक (Social) 99
6.4 संस्थाओं पर प्रभाव (Impact on Institutions)..... 99
6.4.1 वैश्वीकरण और विवाह (Globalization and Marriage)..... 99
6.4.2 वैश्वीकरण और परिवार (Globalization and Family) 100

6.4.3 वैश्वीकरण और जाति (Globalization and Caste) 101
6.4.4 वैश्वीकरण और धर्म (Globalization and Religion)..... 102
6.4.5 वैश्वीकरण और मीडिया (Globalization and Media)..... 102
6.4.6 वैश्वीकरण और राजव्यवस्था (Globalization and Polity)..... 104
6.4.7 वैश्वीकरण और विधिक व्यवस्था (Globalization and Legal System).....104
6.4.8 वैश्वीकरण और भारतीय मूल्य प्रणाली (Globalization and Indian Value System) 105
6.4.9 वैश्वीकरण और शिक्षा (Globalization and Education)..... 105
6.4.10 वैश्वीकरण और स्वास्थ्य (Globalization and Health) 105
6.4.11 वैश्वीकरण और पर्यावरण (Globalization and Environment) 106
6.4.12 वैश्वीकरण और कृषि (Globalization and Agriculture)..... 106
6.4.13 वैश्वीकरण और प्रौद्योगिकी (Globalisation and Technology)..... 107
6.4.14 वैश्वीकरण और बुनियादी ढाँचा (Globalisation and Infrastructure)..... 108
6.4.15 वैश्वीकरण और स्वैच्छिक संगठन (Globalisation and Voluntary Organization) 108
6.4.16 वैश्वीकरण और कॉरपोरेट क्षेत्र (Globalisation and Corporate Sector) 109
6.4.17 वैश्वीकरण और सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम (Globalisation and Public Sector Enterprise)..... 110
6.4.18 सामाजिक क्षेत्रों से पीछे हटती सरकार (Government Retreating from Social Sectors)..... 110
6.4.19 वैश्वीकरण और अनौपचारिक क्षेत्र (Globalisation and Informal Sector) 111

6.5 विभिन्न सामाजिक वर्गों पर प्रभाव (Impact on Different Social Sections).....111
6.5.1 वैश्वीकरण और महिलाएँ (Globalisation and Women)..... 111
6.5.2 वैश्वीकरण और वृद्ध (Globalization and Ageing) 112
6.5.3 वैश्वीकरण और युवा (Globalisation and Youth) 113
6.5.4 वैश्वीकरण और बच्चे (Globalization and Children) 113
6.5.5 वैश्वीकरण और पहचान (Globalization and Identity)..... 114
6.5.6 वैश्वीकरण और जनजातीय (Globalisation and Tribals)..... 114
6.5.7 वैश्वीकरण और दलित (Globalisation and Dalits)..... 115
6.5.8 वैश्वीकरण और श्रमिक वर्ग (Globalisation and Labour Class) 115
6.5.9 वैश्वीकरण और ट्रांसजेंडर (Globalisation and Transgenders) 116
6.5.10 वैश्वीकरण और शरणार्थी (Globalisation and Refugees)..... 116
6.5.11 मध्यम वर्ग (Middle Class)..... 117
6.5.12 वैश्वीकरण और उद्यमिता (Globalisation and Entrepreneurship) 117
6.5.13 वैश्वीकरण और व्यापारिक वर्ग (Globalisation and Business Class) 118
6.5.14 वैश्वीकरण और नागरिक समाज (Globalisation and Civil Society)..... 118
6.5.15 वैश्वीकरण और किसान (Globalisation and Farmers)..... 119

6.6 संस्कृति का वैश्वीकरण (Globalisation of Culture) ..119
6.6.1 परिचय (Introduction) 119
6.6.2 समरूपीकरण (Homogenization) 119
6.6.3 सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का निवर्तन (Retreat of Cultural Nationalism)..... 121
6.6.4 स्वदेशी ज्ञान का व्यावसायीकरण (Commercialization of Indigenous Knowledge) 121
6.6.5 प्रवासन (Migration)..... 122
6.6.6 मैक्डोनाल्डीकरण (McDonaldization) 122
6.6.7 संकरण (Hybridization)..... 122

6.7 निष्कर्ष (Conclusion).....123

अध्याय 7

सांप्रदायिकता (Communalism).....124
7.1 परिचय (Introduction) 124
7.1.1 ऐतिहासिक विवरण (Historical Account) 124
7.1.2 भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (Indian Freedom Struggle)..... 125
7.2 सांप्रदायिकता की निरंतरता के कारण (Reasons for Continuance of Communalism) ...126
7.2.1 स्वतंत्रता के बाद के काल में सांप्रदायिकता (Communalism in the Post-Independence Period)..... 126

7.2.2 धर्म की राजनीति (Politics of Religion)..... 127
7.2.3 राज्य मशीनरी की विफलता (Failure of State Machinery) 127
7.2.4 आर्थिक कारक – सापेक्ष अभाव (Economic Factor – Relative Deprivation)127
7.2.5 वैश्विक प्रभाव (Global Effect)..... 128
7.2.6 बाह्य तत्त्व/कारक (External Elements)..... 128
7.2.7 समसामयिक सांप्रदायिकता (Contemporary Communalism)..... 128
7.3 धार्मिकता एवं सांप्रदायिकता (Religiosity and Communalism)..... 128
7.4 भारत में सांप्रदायिक दंगे (Communal Riots in India)..... 129
7.5 सांप्रदायिकता को रोकने के लिए कदम (Steps to Curb Communalism)..... 129
7.5.1 विधान (Legislative)..... 129
7.5.2 न्यायिक (Judicial) 130
7.5.3 मीडिया (Media) 130
7.5.4 नागरिक समाज (Civil Society) 131
7.5.5 सांप्रदायिकता को रोकने के अन्य उपाय (Other Measures to Curb Communalism)131
7.6 धार्मिक कट्टरवाद (Religious Fundamentalism)..... 132
7.7 कट्टरवाद और सांप्रदायिकता: एक तुलना (Fundamentalism and Communalism- A Comparison Similarity) 132
7.8 निष्कर्ष (Conclusion)..... 132

अध्याय 8

क्षेत्रवाद (Regionalism)..... 134
8.1 परिचय (Introduction) 134
8.2 ऐतिहासिक विवरण (Historical Account)..... 135
8.3 क्षेत्रवाद के कारण (Causes of Regionalism)..... 135
8.3.1 ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक (Historical and Cultural)..... 135
8.3.2 जनसांख्यिकीय (Demographic)..... 135
8.3.3 आर्थिक (Economic) 135
8.3.4 भाषा (Language) 136
8.3.5 भौगोलिक (Geographical)..... 137
8.3.6 राजनीतिक (Political) 137
8.4 भारत में क्षेत्रवाद का प्रभाव (Impact of Regionalism in India) 138
8.5 एकता एवं क्षेत्रीय अखंडता बनाम क्षेत्रवाद (Unity and Territorial Integrity vs Regionalism)..... 139
8.5.1 भाषायी राज्य और भारतीय एकता (Linguistic States and Indian Unity)..... 139
8.5.2 क्षेत्रवाद एवं राष्ट्रवाद (Regionalism and Nationalism)..... 140
8.5.3 क्षेत्रवाद एवं राष्ट्रीय राजनीति (Regionalism and National Politics) 140
8.5.4 क्षेत्रवाद और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था (Regionalism and National Economy)..... 140
8.5.5 निजी नौकरियों में आरक्षण (Reservation in Private Jobs)..... 141
8.6 क्षेत्रीय स्वायत्तता की माँग और राज्यों की राजनीति (Demand for Regional Autonomy and States Politics) 141
8.7 क्षेत्रवाद के समाधान के प्रयास (Efforts to Address Regionalism)..... 142
8.7.1 संविधान की एकात्मक विशेषताएँ (Unitary Features of our Constitution) 142
8.7.2 राज्य पुनर्गठन आयोग (States Reorganisation Commission) 142
8.7.3 संविधान की पाँचवीं और छठी अनुसूची (Fifth and Sixth Schedule of the Constitution)..... 142
8.7.4 विशेष राज्य श्रेणी का दर्जा (Special State Category Status)..... 143
8.7.5 विशिष्ट क्षेत्रों के लिए रोज़गार में आरक्षण (Reservation in Employment for Specific Regions) 144
8.7.6 सहकारी संघवाद (Cooperative Federalism)144
8.8 निष्कर्ष (Conclusion)..... 144

अध्याय 9

धर्मनिरपेक्षता (Secularism)..... 146
9.1 परिचय (Introduction) 146
9.2 संवैधानिक अधिदेश (Constitutional Mandate)..... 146
9.3 सर्व धर्म समभाव (Sarva Dharma Sambhava)..... 147
9.4 धर्मनिरपेक्षता के प्रारूप (Models of Secularism) 148
9.4.1 धर्मनिरपेक्षता का पश्चिमी प्रारूप (Western Model of Secularism) 148
9.4.2 धर्मनिरपेक्षता का भारतीय प्रारूप (Indian Model of Secularism) 149
9.5 धर्मनिरपेक्षता में बाधाएँ (Hindrances to Secularism)..... 150
9.6 सरकारी प्रयास (Government Efforts) 151
9.6.1 अन्य संस्थागत उपाय (Other Institutional Measures) 151
9.7 निष्कर्ष (Conclusion)..... 151

अध्याय 10

सामाजिक सशक्तीकरण (Social Empowerment) 153
10.1 परिचय (Introduction) 153
10.1.1 सशक्तीकरण (Empowerment)..... 153
10.1.2 सामाजिक सशक्तीकरण (Social Empowerment)..... 153
10.1.3 सामाजिक सशक्तीकरण के संकेतक (Indicators of Social Empowerment)..... 153
10.1.4 भारत में सामाजिक रूप से वंचित समूह (Socially Disadvantaged Group in India) 153
10.1.5 सामाजिक समावेशन (Social Inclusion)..... 155
10.2 सामाजिक भेदभाव और बहिष्करण (Social Discrimination and Exclusion) 155
10.2.1 सामाजिक विषमता (Social Inequality)..... 155
10.2.2 सामाजिक स्तरीकरण (Social Stratification) . 155
10.2.3 सामाजिक बहिष्करण (Social Exclusion)..... 155
10.3 भारत में सामाजिक बहिष्करण (Social Exclusion in India) 156
10.3.1 अनुसूचित जाति (Scheduled Caste)..... 156
10.3.2 अनुसूचित जनजाति (Scheduled Tribes) 157
10.4 बहिष्करण का विरोधाभास (The Paradox of Exclusion) 157
10.5 उपाय (Measures)..... 158
10.5.1 सामाजिक सशक्तीकरण के लिए किये गए उपाय (Measures taken for Social Empowerment)..... 158
10.5.2 जनसंख्या के विभिन्न वर्गों के सामाजिक सशक्तीकरण के लिए योजनाएँ (Schemes for Social Empowerment of Different Sections of Population)..... 159

अध्याय 11

भारत में सामाजिक आंदोलन (Social Movements In India)..... 161
11.1 परिचय (Introduction) 161
11.2 भारत में किसान आंदोलन (Farmer's Movement in India)..... 161
11.2.1 कृषक आंदोलन (Peasant Movements) 161
11.2.2 समृद्ध किसानों का आंदोलन (Rich Farmer's Movement)..... 161
11.2.3 वैश्वीकरण और किसान आंदोलन (Globalization and Farmer's Movement) 162
11.2.4 2000 के बाद किसान आंदोलन (Farmer's Movement in Post 2000) 162
11.2.5 2020–21 का भारतीय किसान विरोध (Indian Farmer's Protest 2020-21) 163
11.3 महिला आंदोलन (Women's Movement)..... 163
11.3.1 स्वतंत्रता पूर्व चरण (Pre-Independence Phase)..... 163
11.3.2 स्वतंत्रता के बाद का चरण (Post-Independence Phase) 164
11.3.3 उदारीकरण के बाद का चरण (Post Liberalization Phase)..... 165
11.3.4 सूचना प्रौद्योगिकी और महिला आंदोलन (Information Technology and Women's Movement)..... 165
11.4 दलित आंदोलन (Dalit Movement) 165
11.4.1 स्वतंत्रता पूर्व (Pre-Independence)..... 165
11.4.2 स्वतंत्रता के पश्चात् (Post-Independence) . 167
11.4.3 सोशल मीडिया और दलित आंदोलन (Social Media and Dalit Movements) 168

अध्याय 12

सुभेद्य (Vulnerable Sections)..... 170
12.1 महिलाएँ (Women)..... 170
12.1.1 महिलाओं के लिए विधायी पहल (Legislative Steps for Women)..... 170
12.2 राष्ट्रीय महिला आयोग (National Commission for Women - NCW)..... 171
12.2.1 NCW के कार्य (Functions of NCW)..... 172
12.2.2 NCW के समक्ष चुनौतियाँ (Challenges Faced by NCW)..... 172
12.2.3 NCW की उपलब्धियाँ (Achievements of NCW)..... 172
12.2.4 NCW को मज़बूत करने के लिए उपाय/सुझाव (Ways to strengthen NCW)..... 173
12.3 बच्चे (CHILDREN) 173
12.3.1 बाल संरक्षण और सशक्तीकरण के लिए विधायी प्रावधान (Legislative Provisions for Child protection and empowerment) 174
12.3.2 बच्चों के लिए सरकारी योजनाएँ (Government Schemes for Children)..... 174
12.3.3 राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (National Commission for Protection of Child Rights - NCPCR)..... 175
12.4 दिव्यांग/नि:शक्त (Differently Abled)..... 176
12.4.1 भारत में दिव्यांगों के साथ चुनौतियाँ (Challenges with Disabled in India)..... 176
12.4.2 संवैधानिक प्रावधान (Constitutional Provisions)..... 177

12.4.3 सरकारी नीतियाँ (Government Policies) 177
12.4.4 अंतर्राष्ट्रीय प्रयास (International Efforts) 177
12.5 वृद्ध/वरिष्ठ नागरिक (Elderly/Senior Citizens) 178
12.5.1 वृद्धों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ (Problems faced by elderly) 178
12.5.2 सरकारी पहल (Government Initiatives) 178

अध्याय 13

गरीबी और भुखमरी से संबंधित मुद्दे
(Issues Related to Poverty and Hunger) 181
13.1 गरीबी (Poverty) 181
13.2 गरीबी और उससे जुड़े मुद्दे (Poverty and Associated Issues) 181
13.2.1 बेरोजगारी (Unemployment) 181
13.2.2 कुपोषण (Malnutrition) 181
13.2.3 स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं स्वच्छता तंत्र (Health, Hygiene and Sanitation) 182
13.2.4 निरक्षरता (Illiteracy) 182
13.2.5 गरीबी का नारीकरण (Feminization of Poverty) 182
13.2.6 अपराध एवं सामाजिक तनाव (Crime and Social Tension) 182
13.2.7 बाल श्रम और आधुनिक दासता 182
13.2.8 निर्बल नागरिक समाज (Weak Civil Society) 182
13.3 शहरी और ग्रामीण गरीबी (Urban and Rural Poverty) 182
13.3.1 शहरी भारत में गरीबी (Poverty in Urban India) 182
13.3.2 ग्रामीण भारत में गरीबी (Poverty in Rural India) 183
13.3.3 गरीबी का आकलन (Estimation of Poverty) 183
13.3.4 गरीबी उन्मूलन के प्रति भारत का दृष्टिकोण (India's approach towards Poverty Alleviation) 183
13.4 गरीबी उन्मूलन का वैकल्पिक मॉडल (Alternative Model for Poverty Alleviation) 184
13.4.1 स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका (Role of voluntary organizations) 184
13.4.2 कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (Corporate Social Responsibility-CSR) .. 184
13.4.3 सार्वजनिक निजी भागीदारी (Public Private Partnership) 184
13.4.4 उद्यमिता (Entrepreneurship) 185
13.5 कोविड-19 और गरीबी (COVID-19 and Poverty) 185
13.5.1 निर्धनता के कारण (Reasons for Impoverishment) 185
13.5.2 कोविड-19 के प्रभावों को कम करने की सरकारी पहलें (Government initiatives to mitigate COVID-19 effects) 185
13.6 भुखमरी (Hunger) 186
13.6.1 भारत में भुखमरी और कुपोषण के कारण (Causes of Hunger and Malnutrition in India) 187
13.6.2 सरकारी पहलें (Government Initiatives) 187
13.6.3 भुखमरी और कुपोषण में सुधार के उपाय (Ways to improve Hunger and Malnutrition) 187

अध्याय 14

भारत में सामाजिक आंदोलन
(Social Movements in India) 189
14.1 स्वास्थ्य (Health) 189
14.1.1 स्वास्थ्य क्षेत्र की चुनौतियाँ (Challenges with Health Sector) 189
14.1.2 आगे की राह (Way Forward) 189
14.2 शिक्षा (Education) 190
14.2.1 शिक्षा से संबंधित प्रमुख मुद्दे (Major Issues related to Education) 190
14.2.2 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (National Education Policy-NEP) 2020 ... 190
14.2.3 भारत में शैक्षिक क्षेत्र से संबंधित योजनाएँ (Schemes related to the Educational Sector in India) 191
14.2.4 आगे की राह (Way Forward) 191
14.3 मानव संसाधन (Human Resources) 191
14.3.1 कौशल विकास की आवश्यकता (Need for Skill Development) 192
14.3.2 बाधाएँ (Obstacles) 193
14.3.3 हालिया पहल (Recent Initiatives) 193

ईकाई I

भारतीय समाज

1. भारतीय समाज: एक अवलोकन (Indian Society : An Overview) 2
2. भारतीय समाज में लैंगिक प्रस्थिति (Gender in Indian Society) 17
3. जनसंख्या और संबंधित मुद्दे (Population and Associated Issues) 46
4. गरीबी एवं विकास संबंधी मुद्दें (Poverty and Developmental Issues) 65
5. नगरीकरण (Urbanization) 90
6. वैश्वीकरण और भारतीय समाज (Globalisation and Indian Society) 97
7. सांप्रदायिकता (Communalism) 124
8. क्षेत्रवाद (Regionalism) 134
9. धर्मनिरपेक्षता (Secularism) 146
10. सामाजिक सशक्तीकरण (Social Empowerment) 153
11. भारत में सामाजिक आंदोलन (Social Movements In India) 161

अध्याय 1

भारतीय समाजः एक अवलोकन
(Indian Society : An Overview)

1.1 परिचय (Introduction)

भारत मानव जाति (सभ्यता) का पालना, मानवीय भाषा की जन्मभूमि, इतिहास की जननी, लोककथाओं की दादी और परंपराओं की परदादी है। **—मार्क ट्वेन**

भारत की सदियों से चली आ रही दीर्घकालिक और सतत् सभ्यता, भारत को एक अद्वितीय समाज बनाती है। भौगोलिक परिदृश्य से लेकर धर्म, भाषा, जाति, रीति-रिवाज़, खान-पान से लेकर नृजातीयता आदि सभी आयामों में विविधता ही इसे वास्तव में जीवंत और ज्वलंत बनाती है। विविधताओं के ऐसे अनगिनत आयाम चुनौतियाँ और अवसर दोनों प्रस्तुत करते हैं। तथापि, भारतीयता के मूल चरित्र "बहुलवाद" (Pluralism) और "बहुसंस्कृतिवाद" (Multiculturalism) के प्रति सहिष्णुता, वास्तव में इसे अन्य सभ्यताओं से भिन्न बनाता है। भारत दुनियाभर के अप्रवासियों और आक्रमणकारियों की भूमि रही है, जिसके परिणामस्वरूप इस भूमि पर विविध संस्कृतियों का आगमन और सम्मिलन (अंगीकरण) हुआ। परिणामस्वरूप भारत एक एकीकृत समाज के रूप में उभरा। इसे पश्चिमी समाज के "मेल्टिंग पॉट" के विपरीत 'सांस्कृतिक मोजेक मॉडल' (Cultural Mosaic Model) के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। एक तरफ जहाँ दुनिया भर में "सभ्यता के टकराव (संघर्ष)" के मामले बढ़ रहे हैं, वहीं "वसुधैव कुटुंबकम", "सर्व धर्म समभाव" और "स्वर्णिम मध्यम मार्ग" का आदर्श (दर्शन) सभी क्षेत्रों में भारतीय समाज को सर्वाधिक स्वागत योग्य (स्वीकरणीय) बनाता है।

भारत अपने गौरवशाली अतीत के बावजूद अब एक "प्रिज्मेटिक समाज" (Prismatic society) (पारंपरिक और आधुनिक के बीच की कड़ी) बन गया है। यहाँ गरीबी और ऐश्वर्य, अध्यात्मवाद और भौतिकवाद का एकसाथ सहअस्तित्व है। भारतीय समाज परिवर्तनशील होने के कारण वैश्वीकरण जैसी बाहरी शक्तियों का प्रभाव भी अलग-अलग रूपों में झेल रहा है।

भारतीय समाज में ग्रामीण, शहरी, जनजातीय परिवेश में रहने वाले और भारतीयता के मूल्यों तथा लोकाचार को धारण करने वाले सभी वर्गों के लोग शामिल हैं। भारत स्वयं अनेक पहचानों, विविध रीति-रिवाज़ों, वेशभूषा, खान-पान, रंग, पंथ, जाति आदि का एक बहुरंगी कैनवास है, जो एक अन्य शब्द अर्थात् सर्वसम्मति (Consensus) से बंधा हुआ है, जिसकी सामाजिक विशेषता अनेक विशिष्टताओं से युक्त है।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्यूबन, अफ़्रीकी, अमेरिकी, चीनी लोग संयुक्त राज्य अमेरिका में कैसे रहना प्रारंभ करते हैं, एक बार जब वे संयुक्त राज्य अमेरिका में रहने लगते हैं, तो वे (अमेरिकी) बन जाते हैं और अपनी व्यक्तिगत पहचान खो देते हैं।

मेल्टिंग पॉट

लोगों के पास यह विकल्प है कि वे या तो 'अमेरिकी' बनना चाहते हैं या अपनी खुद की पहचान बनाए रखना

मोजेक

1.2 भारतीय समाज की मुख्य विशेषताएँ (Salient Features of Indian Society)

भारतीय समाज अनेक सूक्ष्म एवं उप-समाजों का एक योग है, जो अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह में रहने वाली एक आदिम जनजाति से लेकर महानगरीय मुंबई के अति-आधुनिक सामाजिक समूह के रूप में विविध हो सकता है। पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की सामाजिक संरचना ग्रामीण परिवेश के पितृसत्तात्मक समाज के बड़े हिस्से की तुलना में स्पष्ट रूप से भिन्न हो सकती है। ऐसी विलक्षणताएँ भारतीय समाज को बहुत जटिल बनाती हैं। तथापि, समाजशास्त्रीय विन्यास (दृष्टिकोण) के अनुसार भारतीय समाज की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हो सकती हैं:

- जाति व्यवस्था
- धार्मिक विविधता
- भाषायी विविधता
- नृजातीय और नस्लीय विविधता
- रूढ़िवादिता/अंधविश्वास
- संक्रमणकालीन समाज
- परिवार व संबंधी
- जनजातीय समाज
- कला एवं संस्कृति
- एक इकाई के रूप में भौगोलिक विविधता

- दार्शनिक/वैचारिक विविधता
- सहनशीलता, प्रेम और करुणा
- अंतर-निर्भरता

1.2.1 जाति व्यवस्था (Caste System)

भारतीय समाज में सामाजिक स्तरीकरण के दो मुख्य रूपों - जाति और वर्ग - में से जाति सामाजिक संरचना की प्रमुख संस्था रही है। किसी व्यक्ति का समाज में क्या स्थान है, यह तय करने में इसका बड़ा योगदान है। भारतीय जनमानस में इसकी जड़ें बहुत गहराई तक समायी हुई हैं, जिनके अनुसार जाति समाज में किसी व्यक्ति की सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक स्थिति के प्रमुख निर्धारकों में से एक है।

विडंबना यह है कि 'जाति' शब्द स्वयं भारतीय नहीं है, यह पुर्तगाली भाषा के शब्द 'कास्टा' 'Casta' से लिया गया है, जिसका अर्थ 'नस्ल' या 'शुद्ध वर्ग' है। स्वयं भारतीयों के पास संपूर्ण जाति व्यवस्था का वर्णन करने के लिए कोई एक शब्द नहीं है, बल्कि वे इसके विभिन्न आयामों के संदर्भ में विभिन्न शब्दों का उपयोग करते हैं, जिनमें से दो मुख्य शब्द 'वर्ण और जाति' हैं।

वस्तुत: जाति एक अंतर्विवाही समूह (Endogamous group) या अंतर्विवाही समूहों का संग्रह है, जिसका एक सामान्य नाम होता है। इसकी सदस्यता वंशानुगत होती है। यह अपने सदस्यों पर सामाजिक संबंधों के मामलों में या तो एक सामान्य पारंपरिक व्यवसाय का पालन करने या एक सामान्य उत्पत्ति का दावा प्रस्तुत करने पर कुछ प्रतिबंध लगाती है और आमतौर पर एक एकल सजातीय समुदाय (Single Homogeneous Community) के रूप में देखी जाती है।

यद्यपि, इसकी शुरुआत व्यावसायिक समूहों के प्राकृतिक विभाजन (श्रम विभाजन की नैसर्गिक व्यवस्था) के रूप में हुई, लेकिन अंतत: धार्मिक स्वीकृति मिलने पर यह कठोरता के साथ जाति व्यवस्था के रूप में परिणत हो गयी। यह हिंदू धर्म के पुनर्जन्म जैसे विश्वास के साथ निकटता से जुड़ी हुई है। इसके अनुसार, ऐसा माना जाता है कि जो व्यक्ति अपनी जाति के अनुष्ठानों और कर्त्तव्यों का पालन करने में विफल रहते हैं, वे निम्नतर स्थिति में पुनर्जन्म लेंगे।

जाति व्यवस्था की विशेषताएँ (Characteristics of Caste System)

इस प्रणाली के कुछ विशिष्ट तत्त्व इस प्रकार हैं:

- **कठोरता** (Rigidity): इसकी पहली विशिष्ट विशेषता इसकी पूर्ण कठोरता (Rigidity) और निश्चलता/गतिहीनता (Immobility) है। जाति व्यवस्था का पालन करने वाले लोगों का मानना है कि एक व्यक्ति की मृत्यु उसी जाति में होती है, जिसमें उसका जन्म हुआ है। जाति ही वह तत्त्व है, जो जीवन में व्यक्ति की प्रस्थिति निर्धारित करता है, जैसे- अछूतों द्वारा सिर पर मैला ढोने का कार्य जन्म से ही निर्धारित होता है।
- **पदानुक्रम** (Hierarchical): भारतीय समाज की जाति संरचना पदानुक्रमित या तथाकथित उच्चतर (Superiority) और निम्नतर (Inferiority) जैसे संबंधों द्वारा एकसाथ रखी गई अधीनता की एक प्रणाली है, जिसके शीर्ष पर ब्राह्मण और सबसे निचले पायदान पर शूद्र हैं।
- **वंशानुगत व्यवसाय** (Hereditary Occupations): किसी जाति विशेष में जन्मा व्यक्ति योग्यता आधारित व्यवसाय के स्थान पर उस जाति समूह के लिए निर्धारित विशिष्ट व्यवसाय का निर्वहन करता है।
- **सहभोज पर प्रतिबंध** (Restrictions on Commensality): विभिन्न जातियों के लोगों के मध्य सहभोज (खाने-पीने) निषेध होने के कारण जाति व्यवस्था सहस्राब्दियों तक जीवित रही। इस प्रतिबंध को धार्मिक ग्रंथों द्वारा बरकरार रखा गया है, जैसे ब्राह्मण अछूतों से भोजन नहीं ले सकता।
- **अंतर्विवाह** (Endogamy)d: जाति व्यवस्था के तहत समान जाति में विवाह करने की प्रथा एक और महत्त्वपूर्ण तत्त्व है, जिसने वर्षों तक जाति व्यवस्था को बनाए रखने में मदद की है। यह प्रथा भारतीयों के विचारों और मानसिकता में इस तरह व्याप्त है कि वर्तमान समय में भी अंतर्जातीय विवाह की अनुमति दुर्लभ एवं कठिन हैं। इसे वैवाहिक विज्ञापनों के प्रचलन के उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। सजातीय विवाह के नियम का उल्लंघन प्राय: बहिष्कार, जाति के क्षय और सम्मान के नष्ट होने (Honour killings) का कारण बनता है।
- **अस्पृश्यता** (Untouchability): जाति व्यवस्था की सबसे घृणित व्यवस्था या स्थिति अस्पृश्यता की प्रथा है। इसके अनुसार शूद्र/अति-शूद्र समूहों से संबंधित लोगों को उच्च जाति के लोगों से दूरी बनाए रखने के लिए मजबूर किया जाता था। शूद्रों को गाँव में उच्च जातियों के लिए निर्मित कुओं से पानी लेने की अनुमति नहीं थी।

जाति का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (Historical Trajectory of Caste)

- **प्राचीन काल** (Ancient Period): भारतीय समाज में चार वर्णों का वर्गीकरण लगभग तीन हज़ार वर्ष पुराना है। हालाँकि, 'जाति व्यवस्था' अलग-अलग समयावधि में अलग-अलग आधारों पर स्थापित रही है, इसलिए एक ही व्यवस्था के तीन हज़ार वर्षों तक जारी रहने के बारे में सोचना भ्रामक है। अपने प्रारंभिक चरण अर्थात् उत्तर-वैदिक काल में लगभग 900-500 ईसा पूर्व के बीच, जाति व्यवस्था वास्तव में एक

मुख्य परीक्षा के विगत् वर्षों के कुछ प्रश्नों को हल कीजिए

1. क्या आप सोचते हैं कि आधुनिक भारत में विवाह एक संस्कार के रूप में अपना मूल्य खोता जा रहा है? (2023)
2. भारत में जातीय अस्मिता गतिशील ओर स्थिर दोनों ही क्यों है? (2023)
3. भारत के जनजातीय समुदायों की विविधताओं को देखते हुए किस विशिष्ट संदर्भ के अंतर्गत उन्हें किसी एकल श्रेणी में माना जाना चाहिए? (2022)
4. भारतीय समाज में जाति, क्षेत्र तथा धर्म के समानांतर 'पंथ' की विशेषता की विवेचना कीजिए। (2022)
5. मुख्यधारा के ज्ञान और सांस्कृतिक प्रणालियों की तुलना में आदिवासी ज्ञान प्रणाली की विशिष्टता की जाँच कीजिए । (2021)
6. भारतीय समाज पारंपरिक सामाजिक मूल्यों में निरंतरता कैसे बनाए रखता है? इनमें होने वाले परिवर्तनों का विवरण दीजिए । (2021)
7. बहु-सांस्कृतिक भारतीय समाज को समझने में क्या जाति की प्रासंगिकता समाप्त हो गई है? उदाहरणों सहित विस्तृत उत्तर दीजिए। (2020)
8. रीति-रिवाज़ और परंपराओं द्वारा तर्क को दबाने से प्रगति-विरोध उत्पन्न हुआ है। क्या आप इससे सहमत हैं? (2020)
9. क्या बात है जो भारतीय समाज को अपनी संस्कृति को जीवित रखने में अद्वितीय बना देती है? चर्चा कीजिए। (2019)
10. क्या हमारे राष्ट्र में सर्वत्र लघु भारत के सांस्कृतिक क्षेत्र हैं? उदाहरणों के सहित स्पष्ट कीजिए। (2019)
11. "जाति व्यवस्था नई-नई पहचानों ओर सहचारी रूपों को धारण कर रही है। अत: भारत में जाति व्यवस्था का उन्मूलन नहीं किया जा सकता है। टिप्पणी कीजिए। (2018)
12. भारत की विविधता के संदर्भ में क्या यह कहा जा सकता है कि राज्यों की अपेक्षा प्रदेश सांस्कृतिक इकाइयों को रूप प्रदान करते हैं? अपने दृष्टिकोण के लिए उदाहरणों सहित कारण बताइए। (2017)
13. स्वतंत्रता के बाद अनुसूचित जनजातियों (एस.टी.) के प्रति भेदभाव को कम करने के लिए राज्य द्वारा की गई दो मुख्य विधिक पहलें क्या हैं? (2017)
14. सहिष्णुता एवं प्रेम की भावना न केवल अतिप्राचीन समय से ही भारतीय समाज का एक रोचक अभिलक्षण रही है, बल्कि वर्तमान में भी यह एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सविस्तार स्पष्ट कीजिए। (2017)
15. क्या भाषायी राज्यों के गठन ने भारतीय एकता के उद्देश्य को मजबूती प्रदान की है? (2016)
16. क्या कारण है कि भारत में जनजातियों को 'अनुसूचित जनजातियाँ' कहा जाता है? भारत के संविधान में प्रतिष्ठापित उनके उत्थापन के लिए प्रमुख प्रावधानों पर प्रकाश डालिए। (2016)
17. भारत में विविधता के किन्हीं चार सांस्कृतिक तत्त्वों का वर्णन कीजिए और एक राष्ट्रीय पहचान के निर्माण में उनके आपेक्षिक महत्त्व का मूल्य निर्धारण कीजिए। (2015)
18. आप उन आँकड़ों को किस प्रकार स्पष्ट करते हैं, जो दर्शाते हैं कि भारत में जनजातीय लिंगानुपात, अनुसूचित जनजातियों के बीच लिंगानुपात के मुकाबले में महिलाओं के अधिक अनुकूल है। (2015)
19. संयुक्त परिवार का जीवन-चक्र सामाजिक मूल्यों के बजाय आर्थिक कारकों पर निर्भर करता है। चर्चा कीजिए। (2014)

अध्याय
2
भारतीय समाज में लैंगिक प्रस्थिति
(Gender in Indian Society)

2.1 परिचय (Introduction)

लिंग का तात्पर्य लड़कियों, लड़कों, महिलाओं, पुरुषों और लोगों की सामाजिक रूप से निर्मित भूमिकाओं, व्यवहारों, अभिव्यक्तियों तथा पहचान से है। लिंग, लोग कैसे स्वयं को और एक-दूसरे को समझते हैं, कैसे कार्य एवं अंत:क्रिया करते हैं, साथ ही समाज में शक्ति तथा संसाधनों का वितरण कैसे होता है, आदि को प्रभावित करता है। लिंग पहचान केवल दो ध्रुवों/पक्षों (लड़की/लड़का, महिला/पुरुष) तक ही सीमित नहीं है और न ही यह स्थिर है, बल्कि यह एक निरंतर चलने वाली पहचान शृंखला है, जो समय के साथ बदल सकती है।

भारतीय समाज सदैव नारी का सम्मान करता रहा है। हिंदू धर्म में पुरुष और महिला दिव्य शरीर के दो हिस्सों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके बीच श्रेष्ठता या हीनता का कोई प्रश्न नहीं है। हिंदू इतिहास में गार्गी, मैत्रेयी और सुलभा जैसी कई विदूषी/विलक्षण महिलाएँ हुई हैं, जिनकी तर्क क्षमता सामान्य मनुष्यों की तुलना में कहीं बेहतर थी। पूरे देश में सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी, काली आदि देवियों की पूजा की जाती है। महाभारत के अनुसार, स्त्री की पूजा करना समृद्धि की देवी की पूजा करना है।

वहीं दूसरी तरफ, पितृसत्तात्मक व्यवस्था ऋग्वेद के समय से ही जारी है। रीति-रिवाज़ और मूल्य पुरुषों द्वारा पुरुषों के पक्ष में बनाये गए थे। महिलाएँ इस भेदभाव को चुपचाप सहती आई हैं।

ऐतिहासिक रूप से भारतीय महिला को विरोधाभासी भूमिकाएँ अपनाने के लिए मजबूर किया गया है। महिलाएँ बेटियों, माँ, पत्नी और बहू के रूप में पालन-पोषण की अपनी पारंपरिक भूमिकाओं को प्रभावी ढंग से निभाएँ, यह सुनिश्चित करने के लिए उन्हें सक्षम बनाया गया। दूसरी ओर, पुरुष पर पूर्ण निर्भरता सुनिश्चित करने के लिए "एक कमज़ोर और असहाय महिला" की रुढ़िवादी अवधारणा को बढ़ावा दिया गया।

2.2 सुधार आंदोलन: एक ऐतिहासिक विवरण (Reform Movements: A Historical Account)

महिला आंदोलन इस अर्थ में सामाजिक आंदोलन का एक महत्त्वपूर्ण रूप है, क्योंकि इसका उद्देश्य समाज में उन संस्थागत व्यवस्थाओं, मूल्यों, रीति-रिवाज़ों और मान्यताओं में बदलाव लाना था, जिन्होंने वर्षों से महिलाओं को अपने अधीन कर रखा है।

महिला आंदोलन एवं संगठन का अध्ययन दो चरणों में किया जा सकता है-

2.2.1 स्वतंत्रता पूर्व (Pre-Independence)

दिलचस्प बात यह है कि महिलाओं की मुक्ति के शुरुआती प्रयास पुरुषों द्वारा शुरू किये गए थे। राजा राममोहन राय और स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे समाज सुधारकों, ब्रह्म समाज और आर्य समाज जैसे संबंधित संगठनों ने महिलाओं की पारंपरिक अधीनता को चुनौती दी, विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहित किया और अन्य मुद्दों के साथ-साथ महिला शिक्षा तथा धर्म के मामलों में निष्पक्षता का समर्थन किया।

हिंदू उच्च जाति की विधवाओं के साथ निंदनीय और अन्यायपूर्ण व्यवहार/प्रथा के प्रति समाज सुधारकों द्वारा उठाया गया एक प्रमुख मुद्दा था। एम. जी. रानाडे ने भारतीय समाज को "मानवीय और समानतापूर्ण बनाने" के अपने प्रयासों में अपना ध्यान महिलाओं पर केंद्रित किया। उन्होंने पर्दा प्रथा (महिलाओं को पर्दे के पीछे रखना) के खिलाफ अभियान चलाया। वह 'सामाजिक सम्मेलन आंदोलन' के संस्थापक थे, जिसका उन्होंने जीवनपर्यंत समर्थन किया। बाल-विवाह, ब्राह्मण विधवाओं के मुंडन, शादियों और अन्य सामाजिक कार्यों के बड़े ख़र्चों और विदेश यात्रा पर जाति प्रतिबंधों के विरुद्ध अपने सामाजिक सुधार प्रयासों का निर्देशन करते हुए उन्होंने विधवा पुनर्विवाह और महिला शिक्षा की पुरज़ोर वकालत की। ईश्वरचंद्र विद्यासागर के प्रयासों से हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856 पारित हुआ।

रानाडे और राजा राममोहन राय उच्च जाति से संबंधित थे, जबकि ज्योतिबा फुले जैसे कुछ मध्यम वर्ग के समाज सुधारक सामाजिक रूप से बहिष्कृत जाति से आते थे, जिन्होंने जाति और लिंग भेदभाव, दोनों के प्रति अपनी आवाज़ उठाई। उन्होंने "सत्य की खोज" पर प्रमुखता से ध्यान देते हुए सत्यशोधक समाज की स्थापना की। फुले के पहले व्यावहारिक सामाजिक सुधार का प्रयास, पारंपरिक ब्राह्मण संस्कृति में सबसे निचले माने जाने वाले दो समूहों - महिलाओं और अछूतों की सहायता करना था।

अन्य सुधारकों के मामले में, जैसे कि मुस्लिम समाज में सुधार के लिए सर सैयद अहमद खान के प्रयासों की यह विशेषता रही कि उन्होंने आधुनिक पश्चिमी विचारों के साथ-साथ पवित्र ग्रंथों (जैसे कुरान) दोनों को एक समान महत्व दिया है। वह चाहते थे कि लड़कियों को शिक्षा मिले, लेकिन उनकी घरेलू सीमा के भीतर। आर्य समाज के दयानंद सरस्वती की तरह, वह महिलाओं की शिक्षा के लिए खड़े थे, लेकिन उन्होंने एक ऐसे पाठ्यक्रम की माँग की, जिसमें धार्मिक सिद्धांतों की शिक्षा, घरेलू कार्यों की कला में प्रशिक्षण, हस्तशिल्प और बच्चों का पालन-पोषण शामिल हो। यह आज बहुत रूढ़िबद्ध प्रतीत होता है। हालाँकि, यह जानना-मानना होगा कि एक बार महिलाओं के लिए शिक्षा जैसे अधिकारों को स्वीकार कर लिया गया, तो एक ऐसी प्रक्रिया शुरू हुई, जिसमें अंततः महिलाएँ केवल कुछ प्रकार की शिक्षा तक ही सीमित नहीं रहीं।

उपर्युक्त पहलों/आंदोलनों ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला। इन आंदोलनों में एक बड़ी कमी यह थी कि ये उच्च जाति की महिलाओं तक ही सीमित थे और इन्होंने गरीब तथा श्रमिक वर्ग की महिलाओं के मुद्दों को नहीं उठाया।

महिलाओं के संबंध में एक और बड़ा विकास उनकी राजनीतिक भागीदारी से जुड़ा था। महिलाओं ने सविनय अवज्ञा आंदोलन और अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन के अन्य रूपों का समर्थन करके उपनिवेशवाद के प्रति अपना मुखर विरोध प्रकट करना शुरू कर दिया। इससे उन्हें आत्मविश्वास और अपने नेतृत्व कौशल को विकसित करने का मौका मिला। उदाहरण के लिए, सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान सरोजिनी नायडू की भूमिका, भारत छोड़ो आंदोलन में उषा मेहता की भूमिका से महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि हुई। यह भी महसूस किया गया कि महिलाओं के मुद्दों को देश के राजनीतिक माहौल से अलग नहीं किया जा सकता। इस अवधि के दौरान सामाजिक सुधार आंदोलन और राष्ट्रवादी आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में गठित प्रारंभिक महिला संगठन इस प्रकार थे-

- **भारत महिला परिषद:** नेशनल सोशल कॉन्फ्रेंस के तत्वावधान में 1905 में शुरू किया गया भारत महिला परिषद सबसे प्रमुख संगठनों में से एक था, जो महिलाओं के लिए सामाजिक मुद्दों पर विचार-विमर्श करने हेतु एक मंच के रूप में कार्य करता था।
- **महिला भारतीय संघ** (WIA): इसकी स्थापना मद्रास में मार्गरेट काजिन्स द्वारा की गई थी। इसने थियोसोफिकल सोसायटी के साथ मिलकर गैर-सांप्रदायिक धार्मिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया और साक्षरता को बढ़ावा देने, विधवाओं के लिए आश्रय स्थापित करने और आपदा पीड़ितों के लिए राहत प्रदान करने के लिए सराहनीय काम किया। महिलाओं की शादी की न्यूनतम आयु (शारदा अधिनियम, 1929) को बढ़ाने के लिए बाल-विवाह निरोधक अधिनियम के अधिनियमन और कार्यान्वयन में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।
- **भारत में राष्ट्रीय महिला परिषद** (NCWI): यह संगठन मुंबई, चेन्नई और कोलकाता की महिलाओं द्वारा बनाया गया था, जिन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान विकसित हुए अपने संबंधों का लाभ उठाया और 1925 में NCWI की स्थापना की।
- **अखिल भारतीय महिला सम्मेलन** (AIWC): उस समय के महिला संगठनों में सबसे महत्त्वपूर्ण अखिल भारतीय महिला सम्मेलन था। हालाँकि, इसके शुरुआती प्रयास महिला शिक्षा में सुधार तक सीमित थे, लेकिन बाद में इसका दायरा महिलाओं के कई अन्य मुद्दों; जैसे - महिलाओं के मताधिकार, विरासत के अधिकार आदि तक बढ़ गया।

कृषक संघर्ष एवं विद्रोह (Agrarian Struggles and Revolts)

प्रायः यह माना जाता है कि केवल मध्यम वर्ग की शिक्षित महिलाएँ ही सामाजिक आंदोलनों में शामिल होती थीं। संघर्ष का एक पहलू महिलाओं की भागीदारी के भूले हुए इतिहास को याद रखना भी है। औपनिवेशिक काल में आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाले संघर्षों और विद्रोहों में महिलाओं ने पुरुषों के साथ हिस्सा लिया, उदाहरणस्वरूप बंगाल में तेभागा आंदोलन, तेलंगाना में तत्कालीन निजाम के शासन के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष और महाराष्ट्र में दासता के विरुद्ध वर्ली आदिवासियों का विद्रोह आदि।

2.2.2 स्वतंत्रता के पश्चात् (Post-Independence)

आज़ादी के बाद के दौर में महिला संगठनों का संघर्ष आज़ादी के पहले जैसा नहीं रहा, क्योंकि देश के साझा दुश्मन अंग्रेज़ अब भारत छोड़ चुके थे। इसके अलावा राष्ट्रवादी आंदोलन में शामिल कई महिला कार्यकर्ता राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में शामिल हो गई थीं। कुछ महिला नेता औपचारिक रूप से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गईं और उन्होंने मंत्री, राज्यपाल और राजदूत के रूप में महत्त्वपूर्ण पदों को संभाला। दूसरी तरफ, विभाजन की त्रासदी ने महिला आंदोलनों को निष्क्रिय बना दिया था।

भारतीय महिलाओं के हितों का समर्थन करने के लिए नेशनल फेडरेशन ऑफ इंडियन वुमेन (1954), समाजवादी महिला सभा (1959) जैसे नए संगठन बनाये गए। तब भारतीय महिलाओं को संघर्षपूर्ण राजनीति में भाग लेने का अवसर मिला। महिला संगठनों ने यह महसूस किया कि महिलाओं से संबंधित नीतियों का कार्यान्वयन न होने के परिणामस्वरूप महिला आंदोलनों में शिथिलता आ गई।